हम विश्वास न खोयें

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक: महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक: किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक: मगनभाओी देसाओ अंक ४१

मुद्रक और प्रकाशक
जोवणजी डाह्याभाओी देसाओ
नवजोवन मुद्रणालय, अहमदावाद-९

अहमदावाद, शनिवार, ता० ८ दिसम्बर, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

राजनीतिक काम या समाजसेवा

[ता० १४ नवम्बरको राजघाटकी सायंकालीन प्रार्थनाके बाद अपने प्रवचनमें विनोबाजीने अिस महत्त्वपूर्ण विषयकी चर्चा की। अुस दिन जवाहरलालजीका जन्म-दिन भी था, और सुबह विनोबाजीकी और अुनकी भेंट भी हुअी थी। —सम्पादक]

आज कअी महीनोंके बाद हमारे प्रिय नेता पंडित जवाहरलाल नेहरूसे मिलनेका और अुनके दर्शनका मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ, और आज ही अुनका जन्म-दिन भी है। अिस अवसर पर मैं अुनकी दीर्घायु और आरोग्य चाहता हूं। अुनसे जो कुछ थोड़ी-बहुत प्रारंभिक बातचीत हुअी, अुसमें अुनके दिलका अेक दुःख प्रकट हुआ। अभी यहां पर हर सूबेसे लोग आये हुअे हैं— कांग्रेसके अुम्मीदवार; और अुनकी छानबीन हो रही है। अुस काममें बहुत समय देना पड़ रहा है। अुसका जो दर्शन होता है, वह भद्र दर्शन नहीं है और अुससे अुन्हें काफी दुःख हुआ है। अैसा अुनके कहनेका सार था। और अिस सबका अुनके दिलमें बहुत दर्द है, अैसा मैं देख रहा हूँ। हर कोअी अपनी स्तुति करता है, यह अच्छी बात तो नहीं, फिर भी कुछ समझमें आ सकती है। लेकिन अुनको तीव्र दुःख तो अिसलिअे है कि अुम्मीदवार लोग अपनी प्रशंसा पर्याप्त नहीं समझते, बल्कि दूसरोंकी निंदा भी करते हैं और यह सारा सहन करना पड़ता है। अैसे झमेलेको जी बर्दाश्त नहीं करता। अिच्छा होती है अुससे भागनेकी। लेकिन छोड़ा भी नहीं जा सकता, क्योंकि जिम्मेदारी है। यह मैं अपने और अुनके बीच हुअी बातचीतका सार अपने शब्दोंमें कह रहा हूं।

कांग्रेसकी शुद्धि

मैं समझता हूं कि वे तो ज़ी-जानसे लगे हैं कि कांग्रेसकी शुद्धि हो। कांग्रेस निस्सन्देह आज सबसे बड़ी जमात है, सिर्फ संख्यामें ही नहीं, बल्कि आज भी अुसमें कअी अच्छे लोग हैं। अुस संस्थाके पीछे अेक महान अितिहास है, जिसका गौरव भविष्यकालमें गाया जायगा। अिसलिअे अगर अुस संस्थाकी शुद्धि होती है, तो हमारा बहुत कुछ काम बन सकता है।

राजनीतिमें हिस्सा क्यों?

लेकिन अिसमें हमें अितनी मुश्किल क्यों मालूम हो रही है? अिसका अेक कारण तो यह है कि हम लोगोंकी कुछ दिशाभूल हो रही है। हम लोगोंके ध्यानमें अेक बात नहीं आती कि जब देश दूसरे देशवालोंके हाथमें होता है और आजादी हासिल करनेका सवाल आता है, तब शक्तिका अधिष्ठान राजकारणमें रहता है और अिसलिअे महात्मा पुरुष भी राजनीतिमें हिस्सा लेना अपना कर्तव्य समझते हैं। तिलक महाराजको जब पूछा गया था कि स्वराज्य प्राप्त करनेके पश्चात् आप क्या करेंगे, तो अुन्होंने कहा था कि मैं तो ज्ञानकी अुपासना करूंगा, विद्यार्थियोंको पढ़ाअूंगा। अुन्होंने अैसा अिसलिअे कहा था कि वह तो अुनके जीवनकी तृप्तिका आन्तरिक विषय था। दिन भर राजनीतिक काम करनेके बाद रातको सोनेसे पहले वे वेदाभ्यास करते थे। अैसी अुनकी ज्ञान-पिपासा थी। फिर भी वे राजनीतिमें पड़े, क्योंकि वे जानते थे कि यदि अिस वक्त राजनीतिमें नहीं पड़ते हैं, तो किसी भी तरहकी सेवा करना मुश्किल हो जाता है। अिसलिअे अुन्होंने राजनीतिको अुस समय परमधर्म माना।

कहनेका तात्पर्य यह कि जिस पुरुषका प्रेम विभिन्न बातोंमें हो, अुसे भी देशकी परतंत्रताकी स्थितिमें राजनीतिमें अुतरना पड़ता है। अुस वक्त राजनीतिमें ही सारी शक्ति निहित होती है। क्योंकि वहां त्यागका अवसर होता है और त्यागमें ही शक्तिका अधिष्ठान होता है। जहां-जहां त्याग-शक्ति रहती है, वहां देवताका रूप रहता है।

समाज-सेवामें शक्ति

लेकिन जब देश स्वतंत्र हो जाता है, तब शक्तिका अधिष्ठान बदल जाता है। शक्ति तब राजनीतिमें नहीं, सामाजिक सेवामें रहती है। क्योंकि फिर समाजका ढांचा बदलना होता है, आर्थिक विषमता मिटानी होती है। ये सारे काम सामाजिक क्षेत्रमें करने पड़ते हैं। अुसमें त्यागके प्रसंग आते हैं, कष्ट सहन करने पड़ते हैं, भोग-लालसाको संयममें रखना पड़ता है, वैराग्यकी जरूरत पड़ती है। अिसलिअे शक्ति अिसी क्षेत्रमें रहती है। लेकिन जिनको अिसका भान नहीं हुआ होता, व गलतफहमीमें रहते हैं कि शायद शक्तिका अधिष्ठान अब भी राजनीतिमें ही है और वे अुसी क्षेत्रकी ओर दौड़े जाते हैं। वहां सत्ता रहती है। लेकिन सत्ता और शक्तिमें बहुत अन्तर है। सत्ता शक्तिसे कितनी भिन्न है अुसे जरा भी सोचें, तो अेकदम फर्क मालूम हो जाता है। सत्तामें अेक पदवी प्राप्त होती है। हां, जब देश स्वतंत्र हो गया है और सत्ता हाथमें ले ली है, तो वहां जाना जरूरी हो जाता है। लेकिन वहां अिनेगिने लोग ही जा सकते हैं। वहां अेक सीमित क्षेत्र होता है, अुसमें संविधान और कानूनकी सीमा होती है। अुसके भीतर रहकर मालिक जिस तरहकी सेवा चाहता है, अुस तरहकी सेवा अुसे करनी पड़ती है। लेकिन वहां भी मनुष्यको जाना पड़ता है, और वहां मोह भी काफी है। कदम-कदम पर मोह, लोभ और लालचके अवसर आते रहते हैं। गिरनेकी संभावना रहती है। अिसलिअे वहां जनक महाराज जैसे निर्लिप्त वृत्तिवाले लोगोंकी आवश्यकता होती है। चन्द लोग ही वहां जा सकते हैं। अुनकी तादाद बहुत कम होगी। बाकी जो अधिक लोग रह जाते हैं, अुन्हें सामाजिक क्षेत्रमें काम करना चाहिये और वहां जाकर देशको आगे ले जानेकी शक्ति निर्माण करनी चाहिये। आज समाजकी जो स्थिति है, अुसे स्वीकार कर अुसकी सेवा करना सत्तावालोंके लिअे भी सरल नहीं है। कोअी भी सत्ताधारी सत्ताके आधार पर हिन्दुस्तानमें — मिसाल देता हूं — बीड़ी बन्द नहीं कर सकता,

www.vinoba.in

क्योंकि आजका समाज अुस बुरी आदतको नहीं छोड़ सकता। अिस बुरी आदतको छुड़ाना अुन लोगोंका काम है, जो सामाजिक क्षेत्रमें सेवा करते हैं। समाजसेवक अिसके खिलाफ समाजको आगे ले जानेका काम कर सकता है और अनुकूल वातावरण बन जाने पर सत्ताधारी बीड़ीको बन्द करनेका कानून बना सकते हैं। अमेरिकामें आज शराबबन्दी नहीं हो सकती, क्योंकि वहांका समाज शराबबन्दीके लिअे अनुकूल नहीं है। परंतु हिन्दुस्तानमें शराबबन्दी हो सकती है, क्योंकि यहांकी भूमिमें अुसके अनुकूल वातावरण मौजूद है।

राजनीतिक सत्तामें समाजको आगे ले जानेकी अधिक शक्ति नहीं है। वह शक्ति और वह वृत्ति सर्व बन्धनोंसे निर्लिप्त, सर्वस्थानोंसे अलिप्त, सेवा-परायण वृत्तिसे समाजकी सेवा करनेवालोंमें ही हो सकती है। अिस वस्तुका भान चूंकि राजनीतिक कार्यकर्ताओंको नहीं है, अिसलिअे वे अुसी क्षेत्रमें जानेका प्रयत्न करते हैं। अगर यह भान हो जाये, तो बहुतसे लोग सामाजिक क्षेत्रमें आनेकी कोशिश करेंगे।

लोकसेवक संघ

गांधीजीने अिसीलिअे दूरदृष्टिसे लोकसेवक संघ बनानेकी सलाह दी थी, जिसे हमने नहीं माना। अुसके लिअे मैं किसीको दोषी नहीं ठहरा सकता। जिन्होंने अिस कांग्रेसको कायम रखा, अुनके पीछे भी अेक विचार था — चाहे अुस विचारमें गलती हो, पर मैं अुसे मोह नहीं कहूंगा। लेकिन अब कांग्रेसके सामने कोअी अैसा कार्यक्रम चाहिये, जिससे रोजमर्रा कुछ त्यागके प्रसंग आवें। जब तक कांग्रेसके सभासदोंकी कसौटी अुस कार्यक्रम पर नहीं कसी जाती, तब तक कांग्रेसकी शुद्धि मृगजलवत् है, अैसी मेरी नम्र राय है।

अन्य दलोंसे

अिसलिअे मेरे जो मित्र आज कांग्रेसमें हैं और जो किसान मजदूर प्रजा पार्टीमें या समाजवादी पार्टीमें हैं, अुन सबसे मेरा कहना है कि जो लोग राजनीतिमें जाना चाहते हैं, अुन्हें मैं ना नहीं कहता; परंतु बाकी सबको सामाजिक सेवामें लग जाना चाहिये। वरना समाजकी प्रगति कुंठित हो जायगी, अितना ही नहीं, समाज नीचे भी गिर सकता है। अिसलिअे समाजमें अेक बड़ी जमात अैसी होनी चाहिये, जो निरन्तर सेवामें लगी रहे, जागरूकताके साथ सेवा करती रहे। अुसे राजकाजका अनुभव भी रहे, लेकिन सत्तासे अलग रह कर वह निर्भयताके साथ तटस्थ बुद्धिसे अपने विचार जाहिर कर सके, जिसका नैतिक असर सरकार पर और लोगों पर भी पड़ सके।

अैसी वही जमात हो सकती है, जो सत्तामें नहीं पड़े — सत्ताकी मर्यादा समझकर, घृणासे नहीं बल्कि यह समझकर कि शक्तिका अधिष्ठान सत्तामें नहीं समाजसेवामें है।

विरोधी दल

आजकल अेक यह खयाल भी हो रहा है कि जो बहुमतमें हैं, अुनके खिलाफ अेक विरोधी दल होना चाहिये। नहीं तो लोकतंत्रका रूपान्तर फासिज्म (अेकतंत्र) में हो सकता है। यह सारी पश्चिमकी परिभाषा है, और चूंकि हमने लोकतंत्रका विचार पश्चिमसे ही ग्रहण किया है, वह परिभाषा भी रहेगी और वह विचार भी रहेगा। यह खयाल गलत नहीं है, अिसलिअे बहुमतके अलावा अल्पमतवालोंका भी आदर करके दोनों — चाहे राजनीतिमें विरोधी हों — मिलकर रहें और परस्पर प्रेमसे काम करें; प्रेममें कोअी फर्क न आने दें। अिससे कुछ नियंत्रण रहेगा और सत्ताधारियोंकी शुद्धि होगी। वे गलतियां करनेसे बचेंगे। लेकिन अितनेसे काम पूरा नहीं हो जाता। देशकी शुद्धिका और देशकी अुन्नतिका काम तभी होगा, जब सत्ताके दायरेसे अलग रहकर सब तरहसे विवेकशील, अध्ययनशील और त्यागशील जमात कायम हो। हमने अैसी जमातको सर्वोदय-समाजका नाम दिया है। अगर अिस विचारसे लोग सहमत हों, तो वे सर्वोदयके सेवक बन जायं। सर्वोदय कोअी पन्थ नहीं, अुसमें कोअी काम अनिवार्य नहीं, अुसमें कोअी कड़ा अनुशासन नहीं; प्रेमसे विचार समझकर सर्वोदयकी सेवा करनी चाहिये। अिसके पीछेकी दृष्टिको सोचकर सब लोग सर्वोदय वृत्तिको स्वीकार करें।

[ता० १६-११-'५१ के 'हिंदुस्तान' से साभार, कुछ संशोधनके साथ।]

सर्व-सेवा-संघकी कार्रवाअी

१. भूदान-यज्ञ

अपनी २३ नवम्बर १९५१ की बैठकमें सर्व-सेवा-संघने भूदान-यज्ञके बारेमें नीचेका प्रस्ताव पास किया:

"श्री विनोबाजी द्वारा प्रेरित और प्रचारित भूदान-यज्ञ अेक अैसी चीज है, जो अहिंसक समाज-रचनाके लिअे आज हिन्दुस्तानमें अनिवार्य और मूलभूत जरूरतकी है। यह ध्यानमें लेकर सर्व-सेवा-संघ अिस भूदान-यज्ञका पूर्ण समर्थन करता है।

"श्री विनोबाजीके भूदान-यज्ञकी मांगको चारों ओरसे जो अनुकूल अुत्तर मिला है, अुसका सर्व-सेवा-संघ स्वागत करता है और सब लोगोंसे विनती करता है कि वे अिस भूदान-यज्ञके कार्यमें पूरा सहयोग दें। सब छोटे-बड़े भू-स्वामियोंसे भी सर्व-सेवा-संघ प्रार्थना करता है कि श्री विनोबा द्वारा शुरू किये गये अिस महान यज्ञमें वे अपना हिस्सा खुले दिलसे अदा करें।

"गांधीजी द्वारा स्थापित रचनात्मक संघोंको और गांधीजीकी विचारधारासे प्रेरित कार्यकर्ताओंको तथा संस्थाओंको सर्व-सेवा-संघ खास तौरसे प्रार्थना करता है कि वे अपनी शक्ति अिस काममें लगावें, जिससे कि यह काम जल्दीसे जल्दी आगे बढ़े और अिस देशकी सत्प्रवृत्ति जाग्रत होकर शांतिपूर्ण मार्गसे सामाजिक परिवर्तन द्वारा समता अेवं शान्तिकी प्रस्थापना हो।"

२. तीन सालकी तालीमका पाठ्यक्रम

बैठकने समग्र ग्रामसेवाके लिअे ग्रामसेवक तैयार करनेका तीन वर्षका पाठ्यक्रम भी स्वीकार किया। अिन तीन वर्षोंमें कार्यकर्ता हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, चरखा-संघ, ग्रामोद्योग विभाग और कृषि-गोसेवा विभागमें तालीम पायेंगे। पहले वर्षके लिअे सारे देशसे २५ विद्यार्थी लिये जायंगे, जिनकी भरती करनेसे पहले योग्यताकी जांचके लिअे प्रारंभिक परीक्षा ली जायगी। यह तालीम अगले फरवरी महीनेसे शुरू होगी।

गांधी और साम्यवाद

[श्री विनोबाकी भूमिका सहित]

लेखक: **किशोरलाल मशरूवाला**

कीमत १–४–० डाकखर्च ०–४–०

स्त्री-पुरुष-मर्यादा

लेखक: **किशोरलाल मशरूवाला**

अनु० **सोमेश्वर पुरोहित**

कीमत १–१२–० डाकखर्च ०–४–०

बापूके पत्र मीराके नाम

अनु० **रामनारायण चौधरी**

कीमत ४–०–० डाकखर्च ०–१३–०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद–९

www.vinoba.in

शान्तिके लिअे भारतीय मजदूरोंका पृष्ठबल

राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेसके संचालकोंने अपने चौथे वार्षिक अधिवेशनके स्थानके लिअे अहमदाबादको — जहां पिछले हफ्तेके शुरूमें ही अधिवेशन हुआ — चुना, यह योग्य ही था। क्योंकि यही वह स्थान है, जहां आजसे ३०–३२ साल पहले गांधीजीने 'पूर्वकी परिस्थितियोंके अनुकूल अेक नये मजदूर आन्दोलनकी प्रयोगशाला' का आरम्भ किया था। और वहां जो अनुसंधान और शोधकार्य हुअे, अुन्हें राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेसने सारे देशके मजदूर-संगठनका आधार बनाया है। अुस अल्पकालीन पवित्र लड़ाअीके* दरमियान गांधीजीने अपनी अनोखी अन्तर्दृष्टिसे यह देख लिया कि "नौकर और मालिकके आपसी संबंधोंका आधार दोनोंका स्वार्थ नहीं बल्कि दोनोंका कल्याण, अितने पैसेके लिअे अितना कामकी भावना नहीं बल्कि पारस्परिक सद्भावना होना चाहिये।" यह पारस्परिक सद्भावना या शान्ति ही स्वागत-समितिकी अध्यक्षा श्रीमती अनसूयाबहनके सुन्दर भाषणका मुख्य स्वर था। अुन्होंने कहा: "सत्य और अहिंसा मजदूर आन्दोलनके बुनियादी सिद्धान्त हैं। साथ ही वे स्वस्थ नागरिक जीवनके भी आधारभूत सिद्धान्त हैं, जो अन्यायके खिलाफ लड़नेके लिअे जरूरी प्रेरणा और बल प्रदान करते हैं।... मजदूर-सेवकको सर्वोदयके अिस शक्तिशाली सिद्धान्तका अनुसरण करना चाहिये।"

अधिवेशनके अध्यक्ष श्री खण्डुभाअी देसाअीने अिसी चीजको दुनियाकी परिस्थिति पर लागू करके विस्तारसे समझाया। अगर मजदूरोंको शांतिपूर्ण बनना है, तो सबसे पहले अुन्हें आपसमें शांतिसे रहना चाहिये। वे तभी अैसे बन सकते हैं, जब मजदूर संघ, जैसा कि अध्यक्षने सही अनुरोध किया है, "विशाल पैमाने पर सुदृढ़ रचनात्मक कामके जरिये मजदूरोंकी सामाजिक, बौद्धिक और नैतिक अुन्नति करनेमें अपनी शक्ति और साधनोंको केन्द्रित करें।" अगर राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेसने मजदूर वर्गमें रचनात्मक काम करनेके लिअे अेक स्वतंत्र विस्तृत प्रस्ताव पास किया होता और व्यवस्थित रूपसे अुस पर अमल करनेके लिअे कमेटियां बना दी होतीं, तो ज्यादा अच्छा होता। यह शांतिके लिअे मजदूरोंका संगठन करनेका अुत्तम वैज्ञानिक मार्ग होता। क्या गांधीजीने यह नहीं कहा है कि "रचनात्मक कार्यक्रम पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करनेका सत्यपूर्ण और अहिंसक मार्ग है?"

दूसरा मोर्चा, जिस पर मजदूरोंको शांतिपूर्ण होना चाहिये, मालिकोंके साथ अुनके संबंधका है। मजदूर अदालतों और अपेलेट ट्रिब्यूनलों (विवाद-न्यायालयों) द्वारा न्याय प्राप्त करनेकी कानूनी कार्रवाअी — यद्यपि अेक हद तक वह महत्त्वपूर्ण प्रश्नोंका निपटारा करनेमें सहायक होती है — बहुत खर्चीली, धीमी और अिसलिअे निराशाजनक होती है। दूसरी तरफ, अुद्योगपति कानूनी सलाहकारोंकी फौजकी मददसे भले मजदूरोंको ठगने और धोखा देने तथा अुनके हकके पैसेसे अुन्हें वंचित रखनेमें कामयाब हो जाते हैं। अिसके अलावा, यह कानूनी तरीका दोनों पक्षोंके बीच कड़वाहट और वैमनस्य पैदा करता है। अिसलिअे राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेसने 'औद्योगिक संबंधों (मालिक-मजदूरके बीचके संबंधों)के बारेमें राष्ट्रीय नीतिके पुनर्गठन' पर जो प्रस्ताव पास किया, वह बेशक सामयिक और स्वागतके योग्य है। वह पुनर्गठन अिस बातमें है कि औद्योगिक झगड़ोंका निपटारा करानेके लिअे 'लगातार न्यायालयोंका सहारा लेने या अनिवार्य पंच-फैसलेके बजाय स्वेच्छापूर्ण समझौतोंको दिनोंदिन ज्यादा स्थान दिया जाय।' प्रस्तावके अन्तमें यह सुन्दर चीज कही गअी है कि 'महात्मा गांधीने आपसी बातचीत और स्वेच्छासे नियुक्त किये जानेवाले पंचकी जिस देशी पद्धतिका विकास किया है, वह मालिक-मजदूर दोनोंमें सद्भावना और समझौतेकी भावना पैदा करती है और अिसलिअे ज्यादा पसन्द करने लायक है।

श्री खंडुभाअी देसाअीने देशके अुद्योग-धन्धोंमें मजदूरोंका अुचित स्थान स्वीकार करनेके बारेमें जो जोरदार दलील पेश की, अुसका पूंजीवादी विचारोंके आदी बने हुअे लोगोंको छोड़कर बाकी सभी हार्दिक समर्थन करेंगे। अुनका यह कहना ठीक ही है कि 'सारा समाज अुद्योगोंका सच्चा मालिक है और पहलेके मालिक तथा मजदूर केवल-समाजके सेवक हैं; दोनोंको औद्योगिक अुत्पादनमें अनुशासनबद्ध सहयोगियोंका पार्ट अदा करना चाहिये और अेक-दूसरेसे किसी तरह अूंचा माननेका गलत दावा नहीं करना चाहिये।'

बेशक, यह औद्योगिक असन्तोष और कड़वाहटका साहसपूर्ण हल है। लेकिन यह पूछना अनुचित नहीं होगा कि जब तक मजदूर वर्गके पीछे कोअी बल नहीं होगा, तब तक क्या मालिक अुनकी समानताको अितनी आसानीसे स्वीकार कर लेंगे? यह सच है कि अगर सरकार 'अिन अुद्देश्योंको मजदूरों संबंधी अपनी राष्ट्रीय नीतिका अंग मानकर अुनके अनुरूप आदेश निकाले, जैसा कि अुसे करना चाहिये, तो मालिकों और मजदूरोंको आपसी झगड़े निपटानेके लिअे न्यायालयोंकी शरण लेनेके बजाय आपसी बातचीत द्वारा समझौता करनेकी प्रेरणा मिलेगी।' लेकिन आत्म-सहायतासे बढ़कर दूसरी कोअी सहायता नहीं है। अगर कानूनी अदालतोंका सहारा लेना कम किया जाय, तो मजदूरोंके पास अेकमात्र पृष्ठबल अहिंसक हड़तालका ही रह जाता है। मजदूरोंकी संगठित शक्तिके बिना हड़तालकी सफलता असंभव है और संगठित शक्ति तब तक असंभव है, जब तक रचनात्मक कार्यक्रम पर व्यवस्थित रूपमें अमल न किया जाय। केवल रचनात्मक कामसे ही मजदूरोंमें भीतरी सुधार हो सकता है और अुनकी सामूहिक शक्ति प्रकट हो सकती है। गांधीजीने ता० २१-४-१९४६ के 'हरिजन' में कहा है: 'चरखेको केन्द्रमें रखकर चलाया जानेवाला अठारह अंगोंवाला रचनात्मक कार्यक्रम संगठित समाजकी सत्याग्रह-भावनाको ठोस रूपमें प्रकट करता है।' लेकिन मजदूर वर्गको बुद्धिपूर्वक और अुत्साहके साथ अिस कार्यक्रमको अपनाना चाहिये। ता० २५-२-१९३८ में गांधीजी दुःखके साथ कहते हैं: 'मजदूर अपनी शक्तिको नहीं जानते। अन्यथा अुन्हें अपनी शक्ति संगठित करने और मालिकोंकी तरह अपनी शर्तें पेश करनेसे कौन रोकता है? यह समझ अुनमें तभी आयेगी, जब वे अहिंसाको स्वीकार कर लेंगे।' मजदूर-वर्गने अनिवार्य पंच-फैसलेके बजाय सामूहिक समझौतेको पसन्द किया, यह ठीक ही है। अिस विषयमें हमें कोअी शंका नहीं कि वे रचनात्मक कार्यक्रम पर अमल करके अपनेमें आवश्यक पृष्ठबल भी पैदा कर लेंगे।

१-११-'५१ रामचन्द्र सोमण

(अंग्रेजीसे)

*१९१८ में गांधीजीके मार्गदर्शनमें अहमदाबादके मिल-मजदूरों द्वारा की गअी अहिंसक हड़ताल, जिसे महादेवभाअीने 'अेक धर्मयुद्ध' कहा है।

अेक धर्मयुद्ध

लेखक: **महादेव देसाअी**

अनु० **काशिनाथ त्रिवेदी**

कीमत ०–१२–० डाकखर्च ०–३–०

नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद–९

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

८ दिसम्बर १९५१

हम विश्वास न खोयें

अेक भाअी लिखते हैं:

"'हरिजन'के पिछले अंकोंमें सरकारकी पंचवार्षिक योजना पर श्री अग्रवाल, आचार्य विनोबा और आपके लेखोंको पढ़कर ही मुझे यह पत्र लिखनेकी प्रेरणा हुअी है। यहां लोगोंका सामान्य मत यह है कि नेहरूकी यह पंचवार्षिक योजना चुनावकी कलाबाजी है। अुसमें कोअी सार नहीं है। यहां तक कि हमारे प्रमुख अुद्योगपतियोंने सन् १९४४ में जो योजना प्रकाशित की थी, अुससे भी वह बेहतर नहीं है।

"समझमें नहीं आता कि आखिर हम कहां हैं और आगे क्या करनेवाले हैं? कांग्रेसके नेता दुबारा सत्ता पानेके लिअे अपनी अेड़ी-चोटीका पसीना अेक कर रहे हैं। हम तो यही चाहते हैं कि मौजूदा सरकार वैधानिक ढंगसे ही बदली जाय और अुसकी जगह बेहतर सरकार बने। लेकिन अुचित तरीकोंके अुपयोगसे परिवर्तन लाना संभव नहीं हुआ, तो ताज्जुब नहीं कि कुछ लोग ज्यादा अधीर हो जायं और अिसके लिअे बल और हिंसाका सहारा लें। अिस अधीरताका कारण क्या है? कारण यही है कि जीविकोपार्जनके सहज और सही साधन हम लोगोंके लिअे और आगे आनेवाली पीढ़ीके लिअे धीरे-धीरे कम होते जा रहे हैं। दूसरी बात यह है कि जीवन-व्यय लगातार बढ़ता जा रहा है, लेकिन साथमें, अपनी आमदनी बढ़ानेके कोअी प्रामाणिक साधन हमारे पास नहीं हैं। जब आमदनी बढ़ानेके साधन नहीं हैं, तो अेक अुपाय यह हो सकता है कि हम दूसरी दिशामें बढ़ें और अपना खर्च कम करें। लेकिन सवाल यह है कि यह करे कौन? हमारे पूंजीपति और कांग्रेस सरकार, जो आज अुन्हें बल पहुंचा रही है, तो अैसा करनेवाली नहीं है। हमारे अुदारमना प्रधान मंत्री श्री नेहरू भी, अपनी सारी अुदारताके बावजूद, आजकल नाराज और नाखुश मालूम होते हैं। क्यों?

"मैं अपना पत्र लम्बाना नहीं चाहता। सिर्फ अितना ही कहना चाहता हूं कि अिस व्यापक असंतोषको थोड़ा शान्त करनेकी कोशिश तुरन्त होनी चाहिये। जमीनका सवाल हल करनेके लिअे आचार्य भावेने जो रास्ता पकड़ा है, वह अद्भुत है। हिन्दुस्तानकी मेहनत-कश देहाती जनता पर हो रहे अेक बहुत बड़े अन्यायके निवारणके लिअे वह गांधीजीके शांतिमय 'करो या मरो' संघर्षका ही अेक नया रूप है। क्या कोअी अिसी तरह साहसपूर्वक हिन्दुस्तानकी मेहनत-कश शहरी जनताको बचाने और राह दिखानेके लिअे आगे आयेगा? ये शिक्षित शहरी लोग आज हताश हो रहे हैं, और अुन्हें राह नहीं सूझ रही है; अिसलिअे वे भी समाजके लिअे अेक बड़ी विपत्तिका कारण बन सकते हैं।"

पंचवार्षिक योजना महज चुनावबाजी है, यह कहना ठीक नहीं है। 'हरिजन' द्वारा प्रकाशित सारी आलोचनाओं और दृष्टिकोणोंके भेदके बावजूद मुझे स्वीकार करना होगा कि अिसके योजकोंने अपने विचारोंके अनुसार देशकी समस्याओंको सुलझानेके लिअे अिस योजनामें प्रामाणिक प्रयत्न किया है। अगर वह चुनावबाजीका दांव होती, तो अुसे और ज्यादा आकर्षक रूप दिया जा सकता था। तब अुसमें जनताको भुलावेमें डालनेवाली भाषामें बड़े-बड़े वादे होते; सिर्फ अुनके साथ 'यदि और परन्तु' की अैसी शर्तें जोड़ दी जातीं, जो पूरी नहीं हो सकती थीं। निश्चय है कि अुसे अैसे रूखे-सूखे वेशमें, जिसे देखकर मतदाताओंमें कोअी अुत्साह नहीं आया, पेश नहीं किया जाता।

हमारी कुछ आर्थिक कठिनाअियां तो अनिवार्य जैसी हैं। दुनियाके दूसरे कअी देशोंमें भी वैसी ही कठिनाअियां आज हैं। सच तो यह है कि अंग्रेजोंको हिन्दुस्तानकी और अेशियाके दूसरे अधिकृत हिस्सोंकी आर्थिक हालत अितनी मुश्किल न मालूम हुअी होती, तो वे सत्ता अितनी जल्दी और अितनी खुशीसे नहीं छोड़ते। अुस तरह भागकर अुन्होंने अपनेको असफलताकी निंदासे बचा लिया और अुस खतरेसे भी बचा लिया, जो लाखों-करोड़ों असंतुष्ट लोगोंके बीचमें रहनेसे अुनके लिअे पैदा होता। अुन्होंने तो घर तब छोड़ा जब वह बिलकुल बरबाद हो गया था, और अुसके पुनर्निर्माणका बोझ कांग्रेस पर डाल दिया। जो कलंक कांग्रेस पर आया है, अुसका कुछ हिस्सा तो अुसका कमाया हुआ है, लेकिन न्यायकी दृष्टिसे बहुत कुछ अंग्रेजोंके सिर जाना चाहिये। देशके विभाजनके अुपरान्त और पिछले चार वर्षोंमें जो बड़ी-बड़ी समस्यायें अुठ खड़ी हुअीं, अगर वे पैदा नहीं होतीं, तो भी देशकी आर्थिक हालत सम्हालना कांग्रेस सरकार या दूसरी किसी भी सरकारके लिअे मुश्किल होता।

सिर्फ सरकार बदल जानेसे हमारी आर्थिक हालत कितनी सुधर जायगी, यह कहना भी कठिन है। किसी भी राजकीय पक्षमें अैसे नेता पर्याप्त संख्यामें नहीं दिखते, जिन्हें शासनके कामका गहरा अनुभव और अध्ययन हो, और जिनमें संगठन करनेकी पर्याप्त क्षमता हो। कुछको अिसका भी पूरा पता नहीं है कि समस्यायें कितनी बड़ी हैं, और अुन्हें ठीकसे किस तरह सुलझाया जा सकता है। हमारे विशेषज्ञ भी अक्सर कल्पनाअें और अनुमान करनेके विशेषज्ञ हैं। पहले कभी अैसी समस्याओंको सफलतापूर्वक सुलझाकर अुन्होंने विशेषज्ञका पद हासिल किया हो, अैसी बात नहीं है। हमारे बहुतेरे — बल्कि अधिकांश — मंत्री भी अपने पदों पर अिसलिअे नहीं हैं कि जो विभाग अुन्हें सौंपा गया है, अुसका शासन करनेकी अुनमें कोअी विशेष योग्यता है। नहीं, दलकी भीतरी राजनीतिका खयाल करते हुअे अुन्हें मंत्रि-मंडलमें जगह देना जरूरी है, अिसीलिअे वे वहां हैं। और अपने विभागके कामकी जानकारी अुन्हें अुतनी ही होती है, जितनी रसायन-शास्त्रके अुस अध्यापकको, जो अपनी नियुक्तिके बाद पहली बार रासायनिक मिश्रण और पदार्थोंकी महज मिलावटका फर्क सीखता है। अपने विभागकी समस्यायें वे धीरे-धीरे, अगर वे विभागकी परम्परा-प्राप्त प्रणालीमें कहीं कोअी फर्क करते हैं तो, अंधेरेमें ढेला फेंकनेके न्यायके अनुसार बार-बार गलतियां करके सीखते हैं। आदर्शकी शुद्धि और अुद्देश्यकी स्पष्टता होना ही काफी नहीं है, बड़े पैमाने पर अुनकी योजना करनेका कौशल भी साथमें होना चाहिये। अपनी अिन्हीं कमियोंके कारण तरह-तरहके गोलमाल हमारे यहां हुअे हैं। और सत्ता किसी भी पार्टीके हाथमें आये, अैसा लगता है कि अभी बहुत दिनों तक यही होता रहेगा। कठिन और कड़ुवा अनुभव ही हमें योग्यता सिखायेगा।

अेक बात साफ है। खर्चमें भारी काट-कसर होनी चाहिये। कोअी पार्टी सिर्फ यही अेक सुधार करनेकी प्रतिज्ञा करे, तो अिस कार्यक्रमसे भी बहुत लाभ हो सकता है और स्वस्थ वातावरण बन सकता है। अिस सिलसिलेमें भारत-सरकारके ताड़-गुड़ विभागके प्रधानने जो अुदाहरण पेश किया है, वह अनुकरणीय है। श्री गजानन नायक जिस तरह रहते हैं, ठीक अुसी तरह रहना हरअेकके लिअे सम्भव नहीं होगा। लेकिन महज किसी सरकारी पद पर आरूढ़ हो जानेसे ही किसीको अपनी पिछली रहन-सहन छोड़कर नयी और अूंची रहन-सहन क्यों अपनानी चाहिये? कहा गया है

www.vinoba.in

कि नये चीनने अिस दिशामें बड़ा अच्छा अुदाहरण पेश किया है। बात सही हो तो हमें नये चीनसे यह चीज सीखनी चाहिये। हमारा आजका प्रवाह तो अुलटी दिशामें बह रहा है और विनाशकी ओर जा रहा है।

साथ ही, यह भी याद रखना चाहिये कि मितव्ययिता ही जिनकी अेकमात्र योग्यता है, अुनमें बहुधा कल्पनाकी अुड़ान कम होती है, और बड़ी योजनाअें हाथमें लेनेमें अुन्हें डर लगता है। भारत जैसे विशाल देशके पुनर्निर्माणके लिअे हमें कल्पना और साहस-सम्पन्न राजनेताओंकी भी जरूरत है। मुश्किल यह है कि अैसे राजनेता अर्थ-मंत्री और लेखा-निरीक्षक आदिके विभागोंको अपनी राहका रोड़ा समझते हैं। अुन्हें लगता है कि शासनमें छंटनी हो, तो सबसे पहले अिन्हीं विभागोंको खतम कर देना चाहिये। मैं अिस पत्रके लेखकसे और दूसरे लोगोंसे, जो अिसी तरह सोचते हैं, आग्रह करूंगा कि वे आजकी स्थितिको बहुत निराशाकी दृष्टिसे न देखें। हमारी जरूरत और योग्यताके अनुसार विधाता हमें यथासमय सही नेता और मार्गदर्शक अवश्य देता रहेगा। देशका शासन और परिस्थिति सुधारनेके लिअे हम अीमानदारी और मेहनतके साथ पूरी कोशिश अवश्य करें; साथ ही परमेश्वरकी योजनामें भी विश्वास रखें। हम देखें कि पिछले साठ सालमें प्रथम पंक्तिके अखिल भारतीय नेताओंकी कैसी अटूट लड़ी हमें मिलती रही। दादाभाअी नौरोजी, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, लाला लाजपतराय, अेनीबीसेन्ट, तिलक, गान्धी — सब अेकसे अेक बढ़कर हुअे। आध्यात्मिक क्षेत्रमें भी अुसने हमें बड़ेसे बड़े नेताओंका सौभाग्य दिया। और गुरुदेव, महात्मा गांधी, रमण महर्षि तथा श्री अरविन्दके चले जाने पर भी अुसने हमें असहाय नहीं छोड़ा है। वे गये तो सरदार वल्लभभाअी पटेल, नेहरू, विनोबाका नेतृत्व हमें मिला और अिनका नेतृत्व भी किसी तरह कम अुज्ज्वल नहीं रहा है। हरअेकने देशको अपनी विशेषता दी है, और पूरा विचार करें तो मालूम होता है कि हरअेकने कोअी न कोअी अैसी सेवा की है, जिसकी हमें अुस समय जरूरत थी। अिसलिअे हम यह विश्वास रखें कि परमेश्वर हमें ठीक समय पर ठीक मार्गदर्शक देनेमें कभी नहीं चूकेगा।

वर्धा, २२-११-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

भूमिदान-यज्ञ

[दिल्ली तथा आसपासके दूसरे स्थानोंमें विनोबा द्वारा किये हुअे अनेक प्रवचनोंके कुछ महत्त्वपूर्ण अंश यहां अिकट्ठे दिये जा रहे हैं। अिन प्रवचनोंकी विस्तृत रिपोर्ट दिल्लीके 'हिन्दुस्तान टाअिम्स' और 'हिन्दुस्तान' में ता० १३ नवम्बरसे २५ नवम्बर तक यथासमय आती रही है। प्रस्तुत अंश आवश्यक परिवर्तनके साथ वहींसे लिये गये हैं। — कि० घ० म०]

भूमिदानकी आध्यात्मिक और नैतिक भूमिका

मैं तो निमित्त मात्र हूं। आप भी निमित्त मात्र हैं। परमेश्वर आप लोगोंसे और मुझसे काम कराना चाहता है। जहां लोग अेक फुट जमीनके लिअे झगड़ते हैं, वहां मेरे कहनेसे सैकड़ों-हजारों अेकड़ जमीन देनेके लिअे तैयार हो जाते हैं। तो आप समझिये कि यह परमेश्वरकी प्रेरणा है। अिसके साथ हो जाअिये। अिसके विरोधमें मत खड़े रहिये। अिसमें से भला ही भला होगा।

मैं तो गरीब और श्रीमान सबका मित्र हूं। मुझे मैत्रीमें ही आनन्द आता है। तो मैं चाहता हूं कि दरिद्रनारायणको, जो भूखा है और अब जाग गया है, आप अपने कुटुम्बका अेक हिस्सा समझ लें। किसीके पास दस हजार अेकड़ जमीन हो और चार लड़के हों, और बादमें पांचवां लड़का हुआ, तो अुसे अपनी संपत्तिके चारकी बजाय पांच हिस्से करने पड़ेंगे या नहीं? मैं जमीनके मालिकोंसे कहता हूं कि आप अपने लड़कोंके साथ मेरी गिनती भी कर लीजिये और मुझे मेरा अुत्तराधिकार दीजिये, जिसे मैं गरीबोंको बांटूंगा।

जहां अैसी राजनीतिक व सामाजिक क्रांति करनेकी बात है, वहां मनोवृत्ति बदल देनेकी जरूरत होती है। यह काम लड़ाअियों या हिंसक क्रांतियोंसे नहीं हो सकता। लड़ाअियों और क्रान्तियोंसे जो काम नहीं हुआ, वह बुद्ध, अीसा, रामानुज आदि महापुरुषोंने किया। यह काम अुन्हींके तरीकेसे होगा। आखिर तो जो मैं चाहता हूं, वह सर्वस्व-दानकी बात है — सबके कल्याणके लिअे अपना सब कुछ समर्पण कर देना है। (हिन्दुस्तान टाअिम्स, १३-११-'५१)

मौजूदा समाज-व्यवस्था स्पर्धा और विषमताकी नींव पर खड़ी है। मैं स्पर्धाकी जगह समानता और सहकारके आधार पर नयी व्यवस्था खड़ी करना चाहता हूं। जब तक अैसा नहीं होता, तब तक मनुष्यके लिअे मुक्ति नहीं है। जिस तरह चार भाअियोंकी मां अेक होती है और मांका सब पर प्रेम होता है, अुसी तरह भूमि सबकी है। किसी अेककी नहीं। अेक गांवकी भूमि अुस गांवके रहनेवाले सभी व्यक्तियोंकी है, न कि दो-चार की। यह क्या कि कुछ लोगोंके पास तो जमीन रहे, और कितने ही लोगोंके पास जमीन न रहे। अैसे समाजमें शांति नहीं हो सकती। लोग अपनी जमीनकी मालिकीके समर्थनमें कानूनी दस्तावेज पेश करेंगे। लेकिन ये कानूनी कागजात ही दिलोंके टुकड़े कर रहे हैं। अिसलिअे मैं कहता हूं कि कानूनी कागजात होलीमें जला दो, अन्यथा समाज कदापि अुन्नति नहीं कर सकता।

लोगोंको यह सत्य मान्य करना चाहिये कि सारी जमीन भगवानकी है। अगर भूमिकी मालिकी समाजकी हो, तो मौजूदा असंतोष खतम हो जायगा और प्रेम तथा सहकारका नया जमाना शुरू हो जायगा। (हिन्दुस्तान टाअिम्स, १४-११-'५१)

मैं भिक्षाके तौर पर जमीन लेना नहीं चाहता। यदि भिक्षाके तौर पर लूंगा, तो आर्थिक ढांचा बदलनेकी अिच्छा पूरी नहीं होगी।

अेक दिन मुझे यह बात समझमें आयी कि अब तो वामन अवतार प्रकट हो गया है — तीन कदम जमीन मांग रहा हूं। पहला कदम यह कि लोगोंको दरिद्रनारायणको अपना अेक लड़का समझकर भूमिहीनोंके लिअे दान देना चाहिये। दूसरा कदम यह होगा कि लोगोंको गरीबोंकी सेवामें लग जाना चाहिये और तीसरा कदम यह कि गरीबोंकी सेवा करते-करते स्वेच्छासे गरीब ही बन जाना चाहिये। यदि स्वेच्छासे यह कर सकोगे, तो बलि राजाके समान बलिदान (बलवानका दान) होगा और हिन्दुस्तानका मसला हल हो जायगा।

आज ही झांसी जिलेके दो भाअियोंने तारसे ५७० अेकड़ भूमिदान दिया है। अिस तरह चारों तरफ हवा फैलती जा रही है। जैसे छूतकी बीमारी देखते-देखते फैल जाती है, वैसे ही सद्-भावना भी फैल जाती है। (हिन्दुस्तान १५-११-'५१)

मैं जानता हूं कि यह कठिन काम है। आसान समझकर अिसे मैंने नहीं अुठाया है। यह अितना कठिन है कि अपनी बुद्धिसे मैं अिसे नहीं अुठा सकता था। बल्कि वह सहज ही मेरे पास आ पहुंचा है। तो मैं अिसे परमेश्वरका आदेश मानता हूं। और जब आ ही पहुंचा, तो अुतनी योग्यता मुझमें है या नहीं, अिस तरह अुसके बारेमें सन्देह-बुद्धिसे सोचना या हिचकिचाना मैं ठीक नहीं समझता। मुझे मान लेना चाहिये कि जिस शक्तिने यह काम हमारे सामने अुपस्थित किया है, वही शक्ति अुसकी पूर्तिके लिअे भी आवश्यक बल देगी। अिस निष्ठासे, श्रद्धासे, अत्यन्त नम्र होकर मैंने यह काम अुठाया है और मैं अिस वक्त सर्वोदयमें माननेवाले हर शख्ससे सहानुभूति और सहकार चाहता हूं। (हिन्दुस्तान, १८-११'-५१)

अैतिहासिक आवश्यकता

जिनके पास भूमि है, वे अपनी भूमि भूमिहीनोंको स्वेच्छापूर्वक दें। मेरी यह कोशिश अितिहासके प्रवाहके खिलाफ है, यह माननेसे मैं अिनकार करता हूं। यह तो आपको समझना चाहिये कि

www.vinoba.in

अितिहासमें जो बात बनी है, अुससे अलग बात बन सकती है। रूसी क्रांति जैसी कोअी घटना पहले नहीं हुअी थी, लेकिन वह हुअी। अुसी तरह यह भी हो सकती है। जो हो, मैं तो मानता हूं कि जो कुछ मैं कर रहा हूं, वह अितिहासके प्रवाहके खिलाफ नहीं है, बल्कि वह अैतिहासिक आवश्यकता है, समयकी मांग है।

मेरा अुद्देश्य क्रांतिको टालना नहीं है। मैं हिंसक क्रांतिसे बचाना चाहता हूं और अहिंसक क्रांति लाना चाहता हूं। हमारे देशकी भावी सुख-शांति भूमिकी समस्याके शांतिमय हल पर निर्भर है। मैं अैसी हवा पैदा करनेकी कोशिश कर रहा हूं, जिसमें कानूनके बंधनोंसे हमारा काम रुका नहीं रहेगा। मैं तो श्रीमानोंसे सीधा जमीन लेता हूं और गरीबोंको सीधा दे देता हूं। जमींदारोंको अिस बात पर राजी किया जा सकता है कि अुन्हें पूरा मुआवजा नहीं मिल सकता, और जितना अुनके लिअे पर्याप्त है, अुतना लेकर अुन्हें संतोष करना चाहिये।

(अेक पत्रकारने पूछा — संविधानको बदल क्यों न दिया जाय?)

अुसके लिअे हमें जमींदारोंका नैतिक समर्थन पाना होगा। कानून लोगों पर लादा नहीं जाना चाहिये। अुसके साथ सबकी, जमींदारोंकी भी सहमति होनी चाहिये।

(अेक दूसरे पत्रकारने कहा — प्रचलित व्यवस्थामें जिनका स्वार्थ है, अुनकी यह मनोवृत्ति नहीं होती कि वे अपना अन्त खुद कर डालें।)

मनस्तत्त्वके अिस विचारको मैं सही नहीं मानता। अगर भूमिवाले अपनी भूमि स्वेच्छासे नहीं छोड़ते, और भूमि-सुधार कानूनके लिअे अनुकूल वातावरण भी तैयार नहीं किया जाता, तो तीसरा रास्ता खूनी क्रान्तिका है। मेरी कोशिश अैसी हिंसक क्रान्ति रोकनेकी है, और तेलंगाना तथा अुत्तरप्रदेशके अपने अनुभवके बाद शांतिमय अुपायोंकी सफलतामें मेरा विश्वास और भी दृढ़ हो गया है। हवा, प्रकाश और पानीकी तरह भूमि भी भगवानकी सहज देन है; और भूमिहीनोंकी ओरसे अुनके लिअे मैं जो मांग रहा हूं, वह न्यायसे अधिक और कुछ नहीं है। (हिन्दुस्तान टाअिम्स, २५-११-'५१)

मेरा लक्ष्य ५ करोड़ अेकड़ भूमि अिकट्ठी करनेका है। मैंने हिसाब किया है कि देशमें ३० करोड़ अेकड़ भूमि पर काश्त होती है। यदि औसतन् पांच व्यक्तियोंका अेक परिवार है, तो दरिद्रनारायणको परिवारका छठा व्यक्ति मान लें। अिस तरह यदि पांच करोड़ अेकड़ भूमि मिल जाती है, तो काम बन जाता है।

अिसमें अेक दिक्कत है। जिस रफ्तारसे मुझे अभी तक भूमि मिलती रही है, अुससे अितनी भूमि अेकत्र करनेमें कअी वर्ष लग जायेंगे। लेकिन मैं समझता हूं कि अब दिन प्रति दिन तेज रफ्तारसे भूमि मिलेगी। (हिन्दुस्तान, १५-११-'५१)

यह समझिये कि दरिद्रनारायणकी ओरसे मैं दान नहीं मांग रहा हूं, बल्कि अपना हक मांग रहा हूं। लेकिन मेरा काम सिर्फ भूमि-दान अिकट्ठा करनेका नहीं है। मैं जमीनके मालिकोंको यह समझानेकी कोशिश कर रहा हूं कि अुन्हें अपनी जमीनका अेक हिस्सा छोड़ देना चाहिये। जहां अुनके ध्यानमें अेक बार यह बात आ गयी कि भूमिहीनोंको भूमिका अधिकार है, कि योग्य कानून बनानेके लिअे अनुकूल वातावरण तैयार हो जायगा। और वातावरण तैयार होने पर जो कानून बनेगा, वह सफल होगा। क्योंकि तब लोग अुसे मान्य करेंगे, फिर चाहे हमारे पांच करोड़ अेकड़के लक्ष्यका बीसवां हिस्सा ही क्यों न पूरा हो। (हिन्दुस्तान टाअिम्स, १५-११-'५१)

यदि शांतिपूर्ण तरीकेसे अैसी हवा तैयार हो जाती है और लोग यह मान लेते हैं कि भूमिहीनोंको जमीन मिलनी चाहिये, लेकिन मोहसे नहीं देते हैं, तो भूमिकी सबसे बड़ी समस्या — जो देशकी सबसे बड़ी समस्या है — कानून द्वारा सरलतासे हल हो सकती है। लेकिन यदि अैसी हवा तैयार नहीं होती है, तो भूमिका मसला खूनी क्रांतिसे ही हल होगा। मुझे आशा है कि गांधीजीका अहिंसात्मक तरीका अवश्य सफल होगा। (हिन्दुस्तान, १५-११-'५१)

www.vinoba.in

दानकी मर्यादा

कल अेक भाअी मेरे पास आये थे, अपनी पत्नीके साथ। दूरसे मध्यप्रदेशसे आये थे। जमीन देनेके लिअे अुनके पास ५० अेकड़ भूमि थी। नम्बर, नकशा सब लेकर आये थे। वे कहने लगे — मैं सारी जमीन देना चाहता हूं। मैंने अुनसे पूछा कि क्या आपका और कोअी धन्धा है, जीवनका साधन है? तो अुन्होंने कहा, नहीं। मैंने कहा कि कुछ हिस्सा दीजिये। अुन्होंने कहा — जितना आप रखना चाहते हैं, रखिये। अुनके तीन बच्चे हैं और चौथा मैं बन गया। १२½ अेकड़ जमीन ले ली और बाकी अुनके पास रहने दी। मुझसे कोअी व्यक्ति पूछ सकता है कि अगर अुनके पास ५० अेकड़ जमीन नहीं होती और ३७½ अेकड़ होती, तो क्या मैं कुछ नहीं लेता। मेरा जवाब है कि अुसमें से भी १०-१२ अेकड़ जमीन प्रेमसे लेता और अिस तरह ली भी है। फिर अुनके पास २५ अेकड़ जमीन बच जाती और अुतनी जमीनसे कोअी दूसरा धन्धा न होने पर भी अुनका गुजारा चल जाता। अितना ही क्यों, मैंने अेक अेकड़वाले किसानसे भी, जिसका और कोअी धन्धा नहीं था, आधा अेकड़ जमीन ली है। तो मुझसे कोअी पूछ सकता है कि ५० अेकड़वालोंसे चौथाअी जमीन लेकर क्यों शांत हो जाता हूं? आप लोग अैसा सोचें कि अगर आपके कुटुम्बमें ३ व्यक्ति हैं तो चौथा भी है अैसा समझो। वह दीखता नहीं है, अव्यक्त है। चौथा अल्पशक्ति है, तो अुसे बड़ा हिस्सा देना चाहिये। २० अेकड़वालोंसे ५ अेकड़ लेता हूं, ५० अेकड़वालोंसे १२½ अेकड़ और ५ अेकड़वालेसे आधा अेकड़ लेता हूं। कोअी अिसे पागलपन कह सकता है। परन्तु मेरा काम ठीक चल रहा है। जमीनकी आर्थिक अिकाअी क्या होनी चाहिये? किसके पास कितनी जमीन रखनी चाहिये? मैं अितना ही कह सकता हूं कि यह मेरा काम नहीं है। मेरा काम पारमार्थिक काम करना है। देशबंधु गुप्त आज चले गये तो कल मैं नहीं जानेवाला हूं अैसा नहीं है। यह कोअी बड़ा भारी मसला नहीं है। मैं चाहता हूं कि देशका बड़ा मसला पहले हल हो। राम आये, लोकसंग्रह किया, फिर भी काम बचा है। कृष्ण आये, लोकसंग्रह किया, फिर भी लोकसंग्रहका काम बचा है। तो फिर हमें अैसा काम करना चाहिये, जिसे हम कर सकें। हम निमित्तमात्र बनकर अपना काम कर रहे हैं।

मेरा काम तो अेक पारमार्थिक हवा पैदा करनेका है यानी सच्ची हवा पैदा करना। अिसका अर्थ ही सच्चा अर्थशास्त्र है। जो गलत अर्थशास्त्र सीखे हैं, अुन्हें मैं समझाना चाहता हूं। अगर वे समझ जायेंगे, तो स्वयं महादेव बन जायेंगे और मेरे प्रचारक हो जायेंगे। मैंने अपने प्रचारके लिअे कोअी संस्था नहीं बनाअी है। जो मेरे विचारको पसन्द कर लेते हैं, वे ही मेरे प्रचारक बन जाते हैं।

अग्नि यह नहीं सोचती कि मैं चूल्हे पर सुलग रही हूं, लेकिन कोअी बरतन रखनेवाला नहीं है, अगर कोअी बरतन रखेगा तो पानी कौन डालेगा, कोअी पानी डालेगा तो चावल कौन डालेगा आदि। अग्नि सोचती है कि मैं सुलग रही हूं। जिसने मुझे सुलगनेकी बुद्धि दी है, वह किसीको बरतन रखनेकी बुद्धि जरूर देगा। सूर्यनारायण यह नहीं सोचता कि मेरे निकलने पर कौन सोता रहेगा और कौन जागता रहेगा। वह अपना काम करता जाता है। सूर्यकी किरणें वहां जाती हैं, जहांका दरवाजा खुला हो। यदि किसीका दरवाजा बन्द है, तो सूर्य वहां नहीं जाता, थोड़ासा खुला है तो थोड़ा अन्दर जाता है, और पूरा खुला है तो पूरा अन्दर जाता है। अिस तरह वह सेवाकी मर्यादा समझता है। मैं भी अपनी मर्यादा समझता हूं।

मैं मानव-हृदयमें परिवर्तन चाहता हूं। लोग पूछते हैं कि क्या अिस तरह परिवर्तन होगा? मैं ज्योतिषी तो हूं नहीं। अिसलिअे कह नहीं सकता कि क्या होगा और क्या नहीं होगा। लेकिन अगर अैसा बन गया, तो देशका कल्याण होगा अैसा मैं

मानता हूं। जिसके पास थोड़ी भी जमीन है और कुछ न कुछ देता है, तो अुससे कुछ न कुछ लेना अपना कर्तव्य मानता हूं।

मैं नहीं समझता कि अिस तरहसे लोग जमीन क्यों नहीं देंगे। हम लोगोंको समझा न सकें, यह बात दूसरी है। लेकिन हमें समझाना चाहिये।

मैं समझता हूं कि समझानेसे लोग समझ जायेंगे, क्योंकि वे जड़ नहीं हैं। वे भी मानव हैं और मैं भी मानव हूं। समझानेसे वे समझ जायेंगे कि अैसा न होने पर आजके समाजको क्या खतरा है। कुछ लोगोंको बात देरसे समझमें आयगी। लेकिन परमेश्वरकी मर्जीसे यह काम जरूर होगा, अैसा मैं मानता हूं। अुसके आधार पर सामाजिक परिवर्तन क्या होना चाहिये, अिस पर मैं नहीं सोचता। वह काम समाज ही कर लेगा। मेरा काम नैतिक हवा पैदा करना है, और अितना करके मुझे संतुष्ट रहना चाहिये। (हिन्दुस्तान, २३-११-'५१)

दानपत्रकी विधि

कलकत्ताके अेक अखबारमें अेक भाअीने शंका अुठाअी है कि विनोबाजी भूमि-दान लेते तो हैं, लेकिन कुछ लिखापढ़ी और कानूनी बाजाब्ता कार्रवाअी भी करते हैं या नहीं? हजारों अेकड़ जमीनका वाक्दान मिले और हाथमें कुछ न आवे, अैसा नहीं होना चाहिये।

अब अुन भाअीके समाधानके लिअे मैं अितना कह दूं कि दानपत्र बाजाब्ता भरे जाते हैं, दो गवाह अुसमें रहते हैं। फिर भी अगर किसी भाअीको अैसा मालूम हो कि अुसने दानपत्र दबावमें भरा है या देनेवालेको समाधान नहीं है, तो मैं वह दानपत्र फाड़ डालता हूं।

यह सब मैं क्या कर रहा हूं? मेरा अुद्देश्य क्या है? मैं परिवर्तन चाहता हूं। प्रथम हृदय-परिवर्तन, फिर जीवन-परिवर्तन, और बादमें समाज-रचनामें परिवर्तन लाना चाहता हूं। अिस तरहसे त्रिविध परिवर्तन, तिहरा अिन्कलाब मेरे मनमें है। तो किसी भी तरहसे लोभ या लालचसे या दबावसे दान प्राप्त हो, तो वह होनेवाला नहीं है। अगर किसी भी तरह, लोगोंको नाखुश करके भी, जमीन ही लेनी हो, तो वह मेरा काम नहीं है। अुसके लिअे बहुतसे शूर-पराक्रमी लोग पड़े हैं। वह काम मेरे हाथों नहीं हो सकता। (हिन्दुस्तान, २१-११-'५१)

प्राप्त भूमिका वितरण

हमारे कार्यकर्ता गांवोंमें जाते हैं और वहां भूमिहीनोंको जमीन बांटनेका काम करते हैं। हमें भूमिहीन गरीबोंको ढूंढ़-ढूंढ़ कर जमीन देना है। कोअी अपनी कन्याका विवाह करना चाहता है, तो अुसके लिअे योग्य वरकी तलाश करता है। अुसी तरह हम अिस दानके पात्रोंकी तलाश करेंगे। विवाह-विधिके बाद जिस तरह कन्याको वस्त्राभूषण और दूसरा दहेज देते हैं, अुसी तरह जमीनके अलावा किसानकी दूसरी आवश्यकताओं — बैल-जोड़ी, बीज आदि — का भी खयाल हम करेंगे।

दिन मुकर्रर कर दिया जाता है और अुस दिन जमीनका बंटवारा करनेका काम जिन्हें दिया गया है, वे सर्वोदय-कार्यकर्ता अुस गांवमें जाते हैं। सब लोगोंको अिकट्ठा कर लिया जाता है। कार्यकर्ता गांवके लोगोंसे पूछताछ करते हैं और सब मिलकर तय करते हैं कि भूमिदान जिन्हें दिया जा सकता है, अुनमें भी सबसे ज्यादा योग्य पात्र कौन हैं। हरिजनों तथा दूसरी पिछड़ी हुअी जातिके लोगोंको तरजीह दी जाती है। अिस बातकी सावधानी रखी जाती है कि जमीन अुन्हीं लोगोंको दी जाय, जो कोअी दूसरा धन्धा न करते हों, और जो जमीन मिल जाने पर खेती करेंगे। कार्यकर्ताओंके साथ महसूल खातेके कर्मचारी भी जाते हैं। वे लोग दानपत्रकी रजिस्ट्री तथा दूसरी जरूरी कानूनी कार्रवाअी पूरी करते हैं। बस, कल तक जो बेसहारा था, वह जमीनका स्वामी बनकर घर लौटता है, और स्वाभिमानकी अेक नयी जिन्दगीका आरंभ करता है! वह जमीनका मालिक किसान बन जाता है!

हैदराबादमें जमीनके बंटवारेका काम चालू हो गया है। वहांकी सरकारने अिस कामके विषयमें बहुत आसान नियम बनाये हैं। अिन नियमोंके अनुसार जमीनका दाता दान करते हुअे 'राजीनामा' लिख देता है। राजीनामा तहसीलदारके पास आता है। तहसीलदार जांच करता है कि अुस जमीन पर सरकारी लगान या कोअी दूसरा कर्ज तो नहीं है। जांचके बाद तहसीलदार यह राजीनामा मंजूर कर लेता है, और फिर जमीन सरकारके हाथमें आ जाती है। अिसके बाद (विनोबाजीकी) समिति अुन आदमियोंको चुनती है, जिन्हें यह जमीन दी जा सकती है। तब जमीन दी जाती है। पर अिस दानके साथ यह शर्त होती है कि अगर गांवमें सहकारी-समितिका निर्माण हुआ, तो जमीन पानेवाला अुस समितिमें शामिल हो जायगा। दूसरी शर्त यह है कि जमीन दस साल तक बेची नहीं जायगी। दी हुअी जमीन खेतीके योग्य हो, पर पड़ती हो और पानेवाला अुसे पानेके बाद दो सालके भीतर तैयार कर ले और बोना शुरू कर दे, तो अुसे पहले तीन साल तक अुस जमीन पर सरकारी लगान नहीं देना पड़ेगा। अिस सारी कार्रवाअीमें रजिस्ट्री या स्टैम्प आदिके लिअे कोअी फीस नहीं लगेगी।

दूसरे राज्य भी स्थानिक परिस्थितियोंके अनुसार कुछ फेरफारके साथ अैसे ही नियम बनायेंगे, अैसी आशा है।

हैदराबादमें हैदराबादकी समितिने तय किया है कि जमीन तरीकी हो, तो प्रति परिवार अेक अेकड़ दी जाय, और खुश्कीकी हो तो परिवारके हर व्यक्तिके पीछे अेक अेकड़ दी जाय। पर छः अेकड़से ज्यादा नहीं। मध्यप्रदेशमें भी बंटवारा अिसी तरहका होगा। विन्ध्यप्रदेशमें शायद जमीन ज्यादा देनी पड़ेगी। और अुत्तर-प्रदेशमें शायद कम करना पड़ेगी। क्योंकि वहां किसानोंकी औसत भू-सम्पत्ति प्रति व्यक्ति काफी कम है। लेकिन अभी तक अिस विषय पर कोअी आखिरी फैसला नहीं हुआ है। (हिन्दुस्तान टाअिम्स, १४-११-'५१)

आक्षेपोंका जवाब

सुबह अेक भाअी आये और बहुत अुत्साहके साथ कहने लगे — आपका कार्यक्रम अच्छा है लेकिन कब पूरा होगा यह नहीं कह सकते। कानूनसे जल्दसे जल्द पूरा हो सकता है और हो जाना चाहिये। तो मैंने कहा — मेरी योजना अहिंसाकी योजना है। अहिंसाकी योजनामें कानून नहीं आ सकता अैसी बात नहीं है, लेकिन पहले लोकमतका प्रदर्शन होना चाहिये। अुसके लिअे पहले हवा तैयार की जाती है। और जब बहुतोंकी हार्दिक सम्मति प्राप्त हो जाती है — चाहे अुस अवस्थामें कुछ लोग विरोध करें — तब कानून मददके लिअे आ सकता है। यह सब मेरी योजनामें है। कानून तो साम्यवादी (कम्युनिस्ट) भी चाहते हैं। अुनकी योजनामें भी कानून होता है। लेकिन पहले कत्लसे आरंभ होता है और फिर वे कानून बनाते हैं। तो अुस कानूनमें भी कत्लका रंग चला आता है। मेरा काम भी कानूनसे समाप्त होगा, लेकिन आरंभ करुणासे होता है। लोगोंको सारी बात शांतिसे समझायी जाती है। जब लोगोंको कबूल होता है कि जो चीज कही जा रही है अुसमें न्याय है और अभी जो हालत है अुसमें अन्याय है, अुसमें बचाव नहीं है, तब मेरा काम पूरा हो जाता है। अिस तरह यह काम करुणासे प्रारंभ होता है और अहिंसाके तरीकेसे चलता है। जब हवा तैयार हो जाती है, तब कानून मददके लिअे आता है।

मैं कअी बार दुहरा चुका हूं कि जिस तरह हवा, पानी, प्रकाश अीश्वरकी देन है और अुसमें कोअी भेदभाव नहीं किया जाता, अुसी तरह जमीन भी अीश्वरकी देन है। अिस विचारको हिन्दीके महाकवि मैथिलीशरण गुप्तने अेक कवितामें बहुत अच्छे ढंगसे प्रकट किया है। छोटीसी कविता है। भूमिदान-यज्ञके सिलसिलेमें लिखी गअी है। (देखिये, लेखके अन्तमें)

कुछ लोग कहते हैं कि मेरी योजना पहले दान-योजना थी और अब मैं हक मांगता हूं। बात अैसी नहीं है। मैं पहलेसे ही न्याय और हककी बुनियाद पर यह बात कह रहा हूं। न्याय यानी कानूनी न्याय नहीं, बल्कि अीश्वरका न्याय। मैंने स्वराज्य शास्त्र पर अेक छोटीसी किताब लिखी है, अुसमें यह बात स्पष्ट कर दी

www.vinoba.in

है। २० साल पहले जेलमें मैंने साने गुरुजीको बताया था कि हमें कानूनसे जमीन तकसीम करनी होगी। मुझे याद नहीं था कि २० साल पहले मैंने यह बात अुनसे कही थी। लेकिन किशोरलालभाअीने याद दिलाया कि साने गुरुजीने वह बात लिख रखी है।

अेक कानून वह होता है, जो जबरदस्ती व हिंसाका प्रतिनिधि होता है। और दूसरा वह जो अहिंसाका। मैं दूसरी तरहके कानूनके लिअे भूमिका तैयार कर रहा हूं। अैसे काममें आरंभमें प्रचारकी गति धीमी होती है। अहिंसाके तरीकेमें अैसा होता है। लेकिन देखते देखते हवामें बात फैल जाती है। 'अब तो बात फैल गअी जानत सब कोअी' वाली बात हो जाती है। और जब फैल जाती है, तो काम होनेमें देर नहीं लगती। यदि हम सब लोग काम करने लगें, तो अिस काममें ५-५० साल लगनेकी जरूरत नहीं, अेक सालमें भी हो सकता है। हमारा पुरुषार्थ कितना है, समझानेकी शक्ति कितनी है, त्याग-शक्ति कितनी है, अिन सबका असर पड़ता है। समझानेसे जितनी आसानीसे काम बनता है, अुतना दबावसे नहीं। मैं कअी बार कह चुका हूं कि दबावसे मुझे कोअी दान नहीं चाहिये। मुझे कलुषित दान नहीं, शुद्ध दान चाहिये। क्योंकि मुझे पूरा विश्वास है कि यदि हम किसीका बुरा न करें, सबका भला चाहें, स्वार्थहित न देखें और सर्वोदयकी दृष्टिसे देखें, तो हमारा काम अपेक्षाकृत जल्दी बन जायगा।

अभी जो कानून है, वह संविधानके मुताबिक अितना ही कर सकता है कि मुआवजा देकर जमीन ले ले। जो कानून है वह ठीक है। लेकिन अहिंसाके तरीकेमें अैसा नहीं है कि मुआवजा लेनेवालेको मुआवजा लेना ही चाहिये और देनेवालेको देना ही चाहिये। अिसमें तो यह है कि जो बड़े जमींदार, मालगुजार व काश्तकार हमारे भाअी हैं, अुनका काम चलना चाहिये और गरीबोंके साथ भी न्याय होना चाहिये। अगर किसी १०,००० अेकड़वाले भाअीको मुआवजा नहीं दिया जाता है, तो वह हिंसा नहीं कही जा सकती। मैं बड़े काश्तकारों, जमींदारों, मालगुजारोंको यह समझानेका विश्वास रखता हूं कि ठीक हिसाबसे मुआवजा लेना जरूरी नहीं है; जितना जरूरी हो अुतना ले लो। अिसलिअे मैं मुआवजेका भी दान लेता हूं। क्योंकि परमेश्वरकी सृष्टिमें जिस तरहकी क्षमता है, अुसीका मैं पालन करता हूं। मैं बेजमीनवालोंको जमीन दिलाना चाहता हूं। मेरी आखिरी आकांक्षा यह है कि हर गांव अेक-अेक कुटुम्ब बन जाय, सब मिलकर जमीन जोतें, पैदा करें, खायें-पीयें और रहें। मैं चाहता हूं कि हर गांव गोकुल बन जाय। आखिर गोकुलमें होता क्या था? सब अेकसाथ खाते-पीते और अेक कुटुम्ब जैसे रहते थे। यह सारा काम समझकर करना है।

गरीबोंका अेजेंट

कुछ लोग मुझे कहते हैं कि मैं श्रीमानोंका अेजेंट हूं। बात अैसी नहीं है। सही बात यह है कि मैं खुद गरीब रहा हूं और गरीबोंके बीच रहा हूं, अिसलिअे मैं गरीबोंका अेजेंट हूं। अुनकी तरफसे मुझे अधिकार मिला है कि मैं अुनकी मांग लोगोंके सामने पेश करूं। मैं अुनके साथ रहा हूं, अिसलिअे मैं अुनका निश्चित अेजेंट हूं। अगर जमींदार भी मुझे अपना अेजेंट बनाना चाहें, तो अुनका भी अेजेंट बननेमें मुझे कोअी अेतराज नहीं है, बशर्ते वे अुदार-दिलसे जमीन दें। अगर वे लोग भी मुझे अपना अेजेंट स्वीकार कर लें, तो अिससे अच्छा और कुछ हो ही नहीं सकता।

दूसरे लोगोंने मुझ पर यह भी आक्षेप किया है कि यह मनुष्य बहुत खतरनाक है। गांधीजीके साथ रहने पर भी यह अैसा आदमी है, जो सारे कानूनकी अिज्जत ही खतम कर रहा है — हरअेकके हककी जो चीज है, अुसे भी खतम कर रहा है। अिसने चलाया है कि जमीन पर किसीका हक ही नहीं। अगर अिसके कहनेके मुताबिक कानून नहीं बनाया गया, तो साम्यवादियोंके लिअे यह रास्ता साफ कर देगा। अिसने जो रास्ता अपनाया है, वह साम्यवादियोंके रास्तेसे भी ज्यादा खतरनाक हो सकता है। मेरा अैसा मत है कि अगर जमींदारोंके दिलमें कंजूसी समा गयी और बहुत ज्यादा जमीन पर वे अपना हक बनाये ही रखें, तो हालत बहुत खतरनाक हो सकती है। खतरा अिस बातका नहीं कि जमींदारोंको कत्ल करनेका प्रोत्साहन मिलेगा, लेकिन जमींदार अपनी अिज्जत खो देंगे; और अिज्जत खोना जिन्दगीसे हाथ धोनेसे भी अधिक खतरनाक है।

तो अिस तरह मुझ पर दोनों तरफसे आक्षेप हो रहा है। अेक यह कि मैं श्रीमंतोंका अेजेंट हूं, और दूसरा यह कि मैं साम्यवादियोंके लिअे रास्ता साफ कर रहा हूं। मैं समझता हूं कि जब दोनों तरफसे आक्षेप हो रहा है, तब काम ठीक रास्ते पर चल रहा है और यही सीधी राह है। मेरा विश्वास है कि मैं सीधे, सरल और सत्य मार्ग पर चल रहा हूं।

परसों मैं अुत्तरप्रदेश चला जाअूंगा। वहां भी लोगोंको समझाअूंगा और नम्रतासे बताअूंगा कि सबकी भलाअी किसमें है। समझाना मेरा काम है। जब आज दूसरों पर कोअी विश्वास नहीं करता है, तब मैंने अपने लोगों पर अत्यंत विश्वास रखा है कि आप लोग मुझे जमीन देंगे। यह साधारण बात नहीं है। अिस तरहसे जमीन मांगनेकी हिम्मत भी होनी चाहिये। मैंने हिम्मत की और नारद मुनिकी तरह सबके घरमें अपना प्रवेश भी मान लिया है। मैं सभी — गरीबों, श्रीमंतों और मध्यमवर्गवालों — के घर जाता हूं और सबके मुंहमें विष्णुका मुंह देखता हूं।

तुलसीदासजीने अेक चौपाअीमें कहा है कि मैंने भगवानको स्वामी मानकर अुसका गुण गाया और रिझाया और अुससे सब कुछ प्राप्त कर लिया। अुसी तरह अगर तुम भी लोगोंको समझा-बुझाकर रिझा लोगे, तो जो मांगोगे वह प्राप्त होगा। अिस तरह करोगे तो निश्चित होकर रातको सोओगे। मैं सबको भगवान स्वरूप देखता हूं और अुनका गुण गाता हूं, निन्दा नहीं करता। मेरा विश्वास है कि हिन्दुस्तानके श्रीमंतों और गरीबों सबमें गुण भरा पड़ा है। अगर हम लोगोंको समझाते हैं और रिझानेका गुण आ जाता है, तो चिन्ता करनेका कोअी कारण नहीं। अुत्साह और शुद्ध हृदयसे मैंने यह काम शुरू किया है और भगवान चाहेगा तो मैं अिसे चलाअूंगा। (हिन्दुस्तान, २४-११-'५१)

भूमिहीन

प्रभुने जिस दिन दिया शरीर,
दिये अुसी दिन हमें दया कर भू-नभ-पावक-नीर-समीर।
अब भी नभमें रवि-शशि-हास,
अग्नि अुष्ण, जल शीत-सुवास,
और पवनमें श्वासोच्छ्वास,
किन्तु भूमि-गाथा गम्भीर!
प्रभुने जिस दिन दिया शरीर!
दिये अुसी दिन हमें दया कर भू-नभ-पावक-नीर-समीर।
भूपर कहां हमारा ठौर?
कहां हमारे मुंहका कौर?
हम भी मनुज कहें क्या और,
समझो मनुज, हमारी पीर।
प्रभुने जिस दिन दिया शरीर,
दिये अुसी दिन हमें दयाकर भू-नभ-पावक-नीर-समीर॥

— मैथिलीशरण गुप्त

विषय-सूची

		पृष्ठ
राजनीतिक काम या समाजसेवा	विनोबा	३५३
सर्व-सेवा-संघकी कार्रवाअी		३५४
शान्तिके लिअे भारतीय मजदूरोंका पृष्ठबल	रामचन्द्र सोमण	३५५
हम विश्वास न खोयें	कि० घ० मशरूवाला	३५६
भूमिदान-यज्ञ	विनोबा	३५७

www.vinoba.in